जैन दीपावली पूजन

lasting impressions

WONDER
CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT

जैन धर्म दीपावली पूजन चित्र

प्रेरणा आशीर्वाद

संतशिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य,
मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज,
मुनि श्री 108 महासागर जी महाराज, मुनि श्री 108 निष्कंपसागर जी महाराज,
क्षु. श्री गम्भीरसागरजी महाराज, क्षु. श्री धैर्यसागरजी महाराज

श्री महावीराय नमः

श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी

गौतमगणधराय नमः

श्री इन्द्रभूति गौतम गणधर

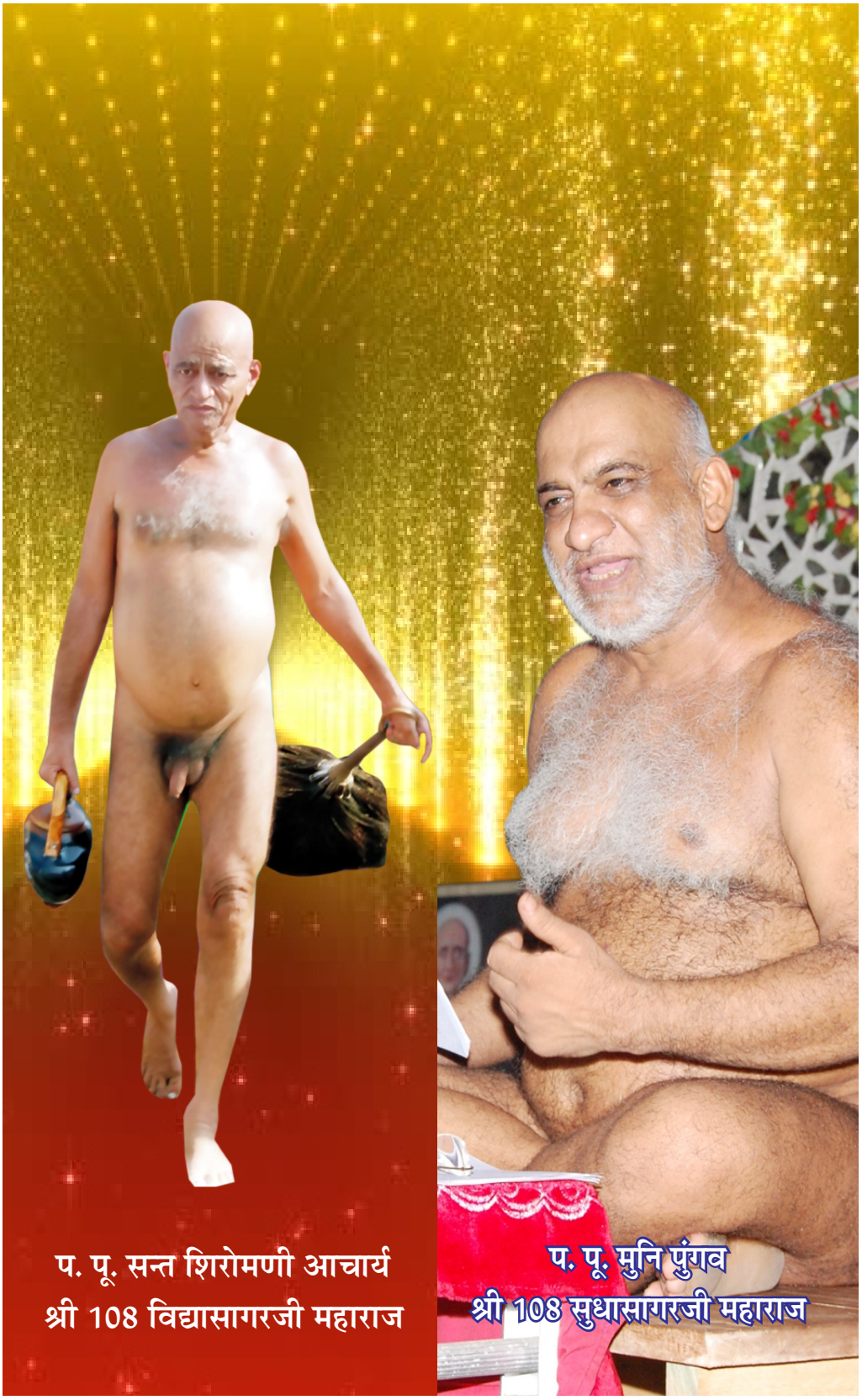

प. पू. सन्त शिरोमणी आचार्य
श्री 108 विद्यासागरजी महाराज

प. पू. मुनि पुंगव
श्री 108 सुधासागरजी महाराज

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज

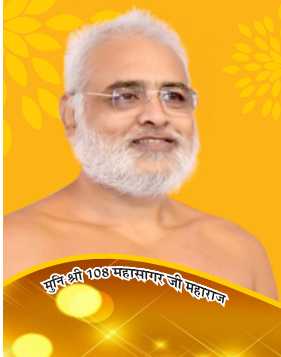

मुनि श्री 108 महासागर जी महाराज

क्षुल्लक श्री 105 गम्भीरसागर जी महाराज

पूज्य क्षुल्लक श्री 105 धैर्यसागर जी महाराज

मुनि श्री 108 निष्कंपसागर जी महाराज

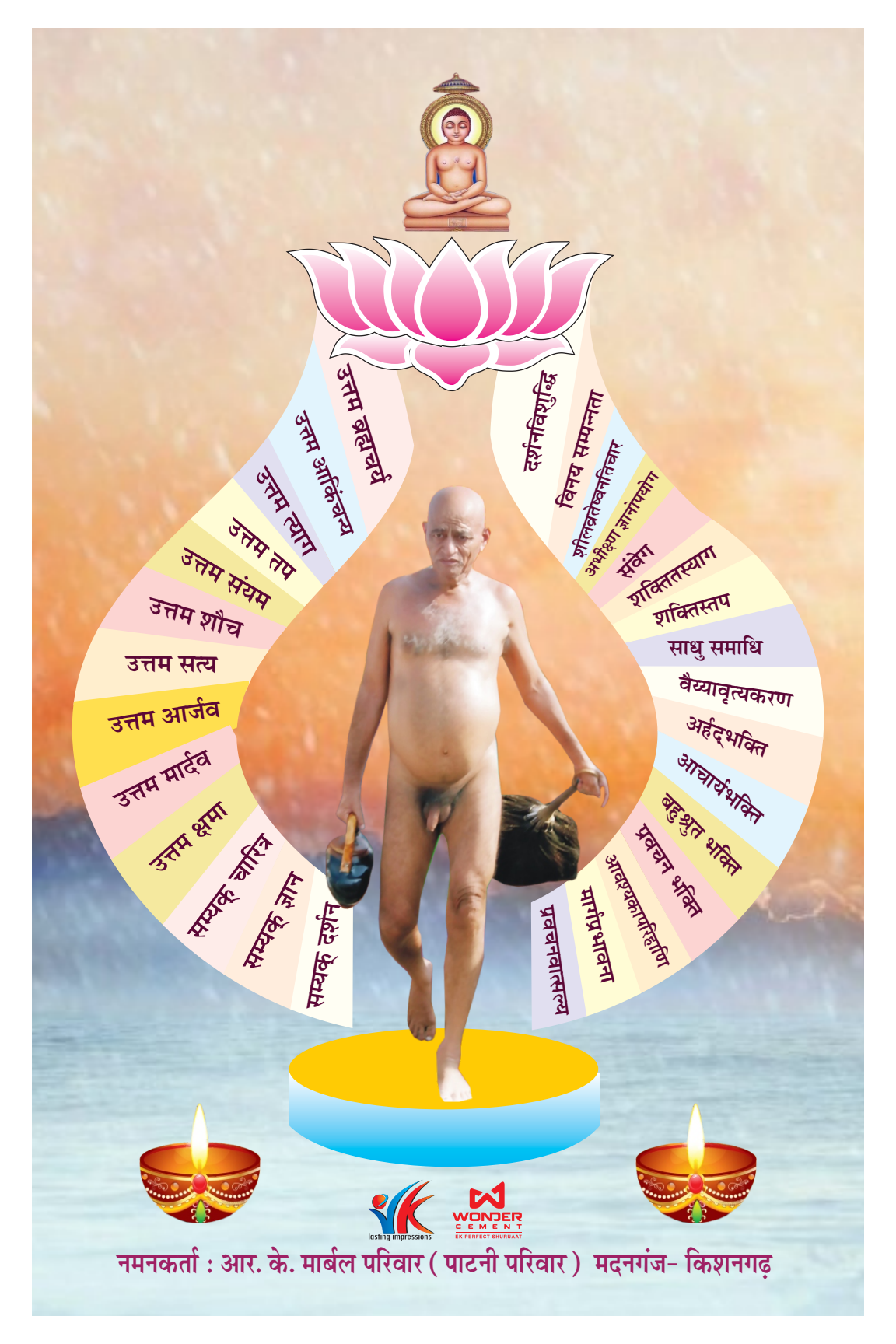

नमनकर्ता : आर. के. मार्बल परिवार (पाटनी परिवार) मदनगंज- किशनगढ़

श्री महावीराय नमः

जैन धर्मानुसार

दीपावली पूजन

-: आशीर्वाद :-

मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज
मुनि श्री 108 महासागरजी महाराज
मुनि श्री 108 निष्कंपसागरजी महाराज
क्षु. श्री गम्भीरसागरजी महाराज
क्षु. श्री धैर्यसागरजी महाराज

lasting impressions

सौजन्य :

WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT

आर. के. मार्बल ग्रुप एवं वन्डर सीमेंट ग्रुप

मकराना रोड़, मदनगंज-किशनगढ़ जिला- अजमेर (राज.)

फोन 01463-301100

प्रसंग : संत शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के 50वें संयम स्वर्ण महोत्सव एवं श्रीमती सुशीला जी पाटनी के दो प्रतिमा व्रत लेने के प्रसंग पर प्रकाशित।

आशीर्वाद : महाकवि आचार्य चूड़ामणि श्री विद्यासागरजी महामुनिराज
मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज
मुनि श्री 108 महासागरजी महाराज
मुनि श्री 108 निष्कंपसागरजी महाराज
क्षु. श्री गम्भीरसागरजी महाराज
क्षु. श्री धैर्यसागरजी महाराज

रचना : जैन दीपावली पूजन

सहयोग : आर.के. मार्बल ग्रुप एवं वन्डर सीमेंट ग्रुप
मकराना रोड, मदनगंज-किशनगढ़,
जिला-अजमेर (राज.),
फोन : 01463-30110

प्रतियाँ : 2000

मुद्रक : निओ ब्लॉक, अजमेर (राज.) मो. 98290 71922

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1	दीपमालिका पर्व	4
2	महावीर निर्वाणोत्सव आगम के परिप्रेक्ष्य में	7
3	दीपावली पूजन विधि	9
4	बही बनाने का मंत्र	10
5	मंगलकलश स्थापना एवं मंत्र	11
6	मंगलाष्टक	12
7	विनय पाठ	14
8	पूजन पीठिका	17
9	अर्घावली	19
10	श्री महावीर जिन पूजन	20
11	गौतम गणधर पूजन	24
12	आचार्य श्री विद्यासागर पूजन	28
13	महार्घ	32
14	शांतिपाठ	33
15	विसर्जन पाठ	34
16	महावीराष्टक स्तोत्र	35
17	निर्वाण काण्ड भाषा	37
18	आरती एवं भजन	39
19	चौंसठ ऋद्धिअर्घ	45

दीपमालिका पर्व

ऋतुओं के अनुसार प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में परिणमन होता है। जिसमें नये से पुराना और पुराने में नया रूप आता जाता रहता है। जो कालचक्र के प्रवाह रूप का परिचय देता है। काल के अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी दो भेद हैं। जिसमें छः छः कालों का विभाजन किया गया है। वर्तमान में अवसर्पिणी काल होकर भी हुण्डावसर्पिणी का प्रभाव सर्वत्र एवं सभी द्रव्यों पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है अर्थात् सभी विचित्रताओं से सहित नये नये दृश्य और संस्कृति एवम् संस्कार के विपरीत धर्म की मर्यादाओं के प्रतिकूल परिणाम देखा जा रहा है।

यह हुण्डावसर्पिणी काल असंख्यात चौबीसी के उपरांत आता है। इस काल के तीसरे आरे में ही भोगभूमि का अभाव होकर कर्मभूमि का दृश्य उपस्थित हो गया था। साथ ही महापुरुषों की उत्पत्ति प्रारम्भ हो गई थी। अन्तिम कुलकर नाभिराय के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जन्म तथा राजा आदिनाथ के प्रथम चक्रवर्ती भरत और कामदेव बाहुबली का जन्म हुआ।

भगवान आदिनाथ ने दीक्षा ले चार घातिया कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया और युग के आदि में धर्म का प्रवर्तन कर कैलाश पर्वत से तीसरे काल के (३ वर्ष ८ माह १५ दिन शेष रहने पर) अंत में मोक्ष प्राप्त किया और सनातन सत्य धर्म के मार्ग को प्रवाहित किया जिसमें भगवान अजितनाथ से तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ तक २२ तीर्थंकर हुए। भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष जाने के उपरान्त हिंसा के ताण्डव नृत्य से दहक रही इस धरा पर इस युग एवं वर्तमान चौबीसी के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म हुआ। जिनके गर्भ में आने पर प्राणी मात्र को अपनी सुरक्षा का वरदान मिला और जन्म के साथ ही अहिंसा के मसीहा का स्पर्श पाकर सम्पूर्ण भारत भूमि आनन्द के सागर में झूमने लगी।

कार्तिक कृष्ण तेरस के दिन समवशरण रूपी बहिरंङ्ग लक्ष्मी का

त्याग किया जिससे वह तेरस भी धन्य हो गयी, क्योंकि अतिथियों (महान आत्माओं) के द्वारा ही तिथि में पूज्यता और धरती पर तीर्थों का निर्माण होता है, पर आज सारी समाज इस तथ्य से अनभिज्ञ हो इस तेरस को धन तेरस मान कर धन की पूजा में ही संलग्न हो गयी है। जबकि इस तिथि पर प्रभु ने देवों की दिव्यलक्ष्मी को भी ठुकरा दिया। बिहार प्रान्त के पावापुरी के पद्म सरोवर पर पहुँचे, वहाँ योग की प्रवृत्ति को संकुचित करते हुए कार्तिक की अमावस्या की प्रत्यूष बेला में, शेष चार अघातिया कर्मों के बंधन से छूट कर, अष्टम भूमि सिद्धशिला अर्थात् लोकाग्र पर जा विराजमान हुए।

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण उपरान्त सौधर्म इन्द्र सहित सभी देवों ने उनके निर्वाण की पूजा कर महान उत्सव मनाया। जिसके परिणाम स्वरूप यह भारत भूमि की अनुकम्पा की कृतज्ञता स्वीकार करते हुए, प्रत्येक कार्तिक माह की अमावस्या को प्रातःकाल तीर्थ भूमियों, सिद्ध भूमियों, अतिशय क्षेत्रों एवं अपने-अपने जिनालयों में प्रभु की पूजन भक्ति कर, सभी निर्वाण भूमियों और निर्वाण प्राप्त आत्माओं को याद कर निर्वाण लाडू चढाते हैं। साथ ही अपनी खुशी का विस्तार करते हुए परस्पर में सौहार्द्र, वात्सल्य स्वरूप धर्म की ज्योति का प्रकाशन करते हैं। इसी दिन अमावस्या की काली रात होने पर भी गोधूलि बेला में भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर इन्द्रभूमि गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, तब सौधर्म इन्द्र आदि सभी देवों ने केवलज्ञानी गौतम के चरणों में आकर उनकी पूजा की और प्रभू से प्रार्थना करते हुए कहा- हे अरहन्त परमेष्ठी! आप अपनी वीतरागता, धर्मोपदेशता और सर्वज्ञता के द्वारा मर्त्य भूमि पर विहार कर सभी को दिव्य ज्ञान प्रदान करें और सभी के अन्तःकरण में विराजमान अज्ञान अन्धकार को दूर करते हुए सम्यग्ज्ञान का प्रकाश प्रदान करें ऐसे प्रकाशदायी गौतम स्वामी की केवलज्ञान की पूजन स्वरूप शाम को सभी मन्दिरों एवं घरों में बाहरी अमावस्या की काली रात को प्रकाशमान करते हैं, साथ ही छोटे से इस मिट्टी के दीपक से शिक्षा लेते हैं कि अन्तस् के अन्धकार को भी प्रकाश में परिवर्तित करें । गोधूलि बेला में

की जाने वाली पूजन धन लक्ष्मी की नहीं अपितु केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी की प्रतीक होनी चाहिए। इस तरह हम सभी रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रम से उस पार जाकर सत्य की पहचान करें और सत्य के प्रकाश से अपने को प्रकाशित करें, तभी प्रभु का निर्वाण महोत्सव, गौतम स्वामी का केवलज्ञान कल्याणक सार्थक और हम सभी के द्वारा की जाने वाली पूजन, भक्ति, अर्चना भी सफल होगी। इन पर्वों, महोत्सवों त्योहारों पर मीठा खाकर मात्र मुँह को ही मीठा न करें अपितु बाहरी प्रकाश से अंतकरण भी प्रकाशित करें और मिठाई के साथ-साथ अपने आचरण, व्यवहार, वात्सल्य, सहकार सौहार्द को परस्पर में बाँटकर स्व-पर जीवन को भी मधुर बनायें। प्रेम, करुणा के दीपक जलाकर सभी में अपनत्व का संचार करें।

हमें पढ़े और ध्यान दें

* निर्वाण लाडू एवं दीपमालिका भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक तथा गौतम गणधर के केवलज्ञान की भक्ति-पूजा का उत्सव है।
* चौदस-अमावस शामिल होने पर भी ध्यान रखें कि पहले मंदिर में वीर निर्वाण संबंधी अभिषेक पूजन-लाडू चढ़ाने के बाद ही गोधूलि बेला यानि शाम को घर में दिन रहते द्रव्य पूजन करें; क्योंकि भगवान महावीर के मोक्ष कल्याण के बाद ही गणधर इन्द्रभूति गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ था। फिर पहले घर की, बाद में मन्दिर की दीवाली कैसे मना सकते हैं। अतः लौकिकता में परमार्थ को न भूलें।
* दीपावली अहिंसा का पर्व है, इसे हिंसा का रूप न दें, पटाखे फोड़कर अहिंसा-धर्म, धन का दुरुपयोग न करें। साथ ही प्राणी मात्र को अभय दान देकर अपने वात्सल्य, संवेदनशीलता के परिचय द्वारा सभी जीवों से अपनत्व एवं मैत्री स्थापित करें।

महावीर निर्वाणोत्सव आगम के परिप्रेक्ष्य में

वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर का निर्वाण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के अन्तिम प्रहर में (अमावस्या की प्रातः) में स्वाति नक्षत्र में हुआ था। लौकिक मान्यता से कभी इसे चतुर्दशी एवं कभी अमावस्या को मनाया जाता है, इस विसंगति का निराकरण आचार्यों ने तिलोयपण्णति, षट्खण्डागम (धवला टीका), कषाय पाहुड (जय धवला टीका) उत्तरपुराण, वर्द्धमान चरित्र, पुराणसार संग्रह, दशभक्ति संग्रह आदि ग्रन्थों में किया है। जिस तिथि में स्वाति नक्षत्र होता है उसी तिथि में निर्वाण महोत्सव मनाना चाहिए।

डॉ. नेमीचन्द्र ज्योतिषाचार्य ने व्रत निर्णय में स्पष्ट किया है कि इसमें नक्षत्र की विशेषता है तिथि की नहीं। जैसे रोहिणी नक्षत्र अक्षयतृतीया, श्रवण नक्षत्र में रक्षाबन्धन, अभिजित नक्षत्र में वीर शासन जयन्ती एवं विशाखा नक्षत्र में पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है उसी प्रकार महावीर निर्वाण महोत्सव में स्वाति नक्षत्र ही मुख्य है। यदि दो तिथि हों तो जिस तिथि में स्वाति हो उसी तिथि में ही निर्वाण महोत्सव मनाना चाहिए।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को भगवान महावीर स्वामी का समवशरण विसर्जन हुआ और उन्होंने निर्वाण प्राप्ति के लिए पावापुरी के पद्मसरोवर में योग निरोध धारण किया। इसी कारण त्रयोदशी धनतेरस के रूप में प्रसिद्ध हुई और धार्मिक अनुष्ठान में धन्य त्रयोदशी का व्रत भी प्रचलित हुआ।

प्रातः भगवान का निर्वाण होते ही सौधर्मइन्द्रादिक ने आनन्द नाटक के साथ निर्वाण महोत्सव मनाया। प्रतिवर्ष वर्तमान में भी धार्मिक अनुष्ठान संयम साधना एवं व्रत विधान पूर्वक यह महोत्सव मनाया जाता है।

उसी दिन गोधूली बेला में महावीर स्वामी के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को कैवल्य की प्राप्ति हुई। कैवल्य ज्योति प्रकट होने के उपलक्ष्य में दीप प्रज्वलित करके दीपोत्सव मनाते हैं। दीपावली मनाने के विभिन्न सम्प्रदायों में विभिन्न कथानक हैं। जिनके अनुसार दीपावली मनायी जाती

है। जैन श्रावक भी उन्हीं का अनुसरण कर लक्ष्मी पूजा, व्यापार उपकरण पूजा, देवी- देवता पूजा आदि क्रियाएँ रात्रि में सम्पन्न करते हैं जो जैन धर्मानुसार उचित नहीं हैं।

दीपोत्सव हेतु निर्देश-

१ पूजन हेतु स्थान की शुद्धि करके ऊँची टेबिल पर उत्तर पूर्वाभिमुख जिनवाणी विराजमान कर पूजन अनुष्ठान शुद्ध वस्त्रों में सूर्यास्त से पूर्व सम्पन्न करें।

२ पूजन में भगवान की अप्रतिष्ठित धातु, प्लास्टिक की मूर्तियाँ तथा देवी देवताओं की मूर्तियाँ चित्र फोटो कलेण्डर आदि नहीं रखना चाहिए क्योंकि वह पूजनीय नहीं है। अतः पूजा हेतु जिनवाणी रखें।

३ पूजन में रुपया, सिक्का, खाद्यान्न आदि न रखें, दीपावली के दिन धन लक्ष्मी की नहीं ज्ञान लक्ष्मी की आराधना एवं कामना करें।

४ व्यापारिक उपकरण तराजू, बाँट, मीटर, आदि की पूजा न करके स्वस्तिक अंकित कर उन्हें शुद्ध तथा व्यवस्थित एवं निष्ठापूर्वक व्यापार करने का संकल्प करें।

५ दूध, अक्षत, आदि मंगल द्रव्य के रूप में रखें पर उनसे पूजन न करके प्रज्वलित दीपों से आरती करें।

६ दीपावली पावन पर्व है अतः जुआ, सट्टा, मद्यपान आदि खोटे कर्म नहीं करना चाहिए।

७ पूजन के बाद मिष्ठान वितरण प्रसाद के रूप में न करें क्योंकि जैन शास्त्रों में प्रसाद वितरण का कोई उल्लेख नहीं है।

८ धनतेरस (धन्य त्रयोदशी) के दिन महावीर भगवान योग निरोध करके मुक्ति लक्ष्मी पाने को अग्रसर हुए थे इसी भावना से पूजानुष्ठान आदि करें परन्तु धार्मिक मान्यता से बर्तन, रजत या स्वर्णादि क्रय न करना चाहिए।

९ पटाखों से अत्याधिक जीव हिंसा एवं प्रदूषण होता है स्वयं को हानि होती है एवं पाप का भारी बन्ध होता है, अतः पटाखों का प्रयोग न करें।

卐 दीपावली पूजन विधि 卐

दीपावली के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सामायिक पाठ आदि दिनचर्या से निवृत्त होकर स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिनकर अष्टद्रव्य लेकर मन्दिरजी जाना चाहिए। मन्दिर में पूरे उत्साह के साथ अभिषेक एवं नृत्य पूर्वक पूजा के बाद महावीर निर्वाण पूजा, निर्वाणकाण्ड पढकर लाडू चढाएँ तत्पश्चात् स्वाध्याय एवं आत्म चिंतन करें। मुनि आदि पात्रों के होने पर आहारदान के पश्चात् ही भोजन करना चाहिए।

आवश्यक सामग्री- शुद्ध प्रासुक जल, पूजन के बर्तन, अष्टद्रव्य चौकी, घिसी हुई केशर, दीपक, घी, बाती, कलश (मांगलिक सुपारी, पीली सरसों, सवा रुपया, पञ्चरत्न, चाँदी का स्वस्तिक सहित) श्रीफल, आचार्य प्रणीत ग्रन्थ, मौली (पचरंगा धागा)।

विधि- अपराह्न काल में स्नानोपरान्त शुद्ध वस्त्र पहनकर पूजन के लिए अष्टद्रव्य शुद्ध प्रासुक जल से धोकर तैयार करें। शुद्धि मन्त्र द्वारा स्वयं की शुद्धि करके जिस स्थान पर पूजन करना है उस स्थान की शुद्धि करें। माण्डने पर ऊँचे चौके पर आचार्य प्रणीत ग्रन्थ विनय पूर्वक पूर्व या उत्तराभिमुख विराजमान करें। श्री का मण्डल बनाकर ईशान कोण में श्रीफल युक्त कलश एवं आग्नेय कोण में जाली से ढककर दीपक स्थापित करें।

लय एवं शुद्धोच्चारण के साथ विनयपाठ, पूजनपीठिका, स्वस्तिपाठ, परमर्षि स्वस्ति पाठ पढकर देव शास्त्र गुरु, वर्तमान चौबीसी, आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी का अर्घ्य चढाकर गौतमस्वामी एवं सरस्वती पूजन करके शान्तिपाठ पूर्वक विसर्जन करें।

पूजनोपरान्त सोलहकारण भावना के प्रतीक सोलह दीपकों में ६४ बाती जलाकर महावीराष्टक पढ़ें, आरती करें तथा दीपकों को मन्दिरजी, गृहद्वार, रसोईघर एवं सभी कमरों में रखें। आसपास रहने वाले सम्बन्धियों के यहाँ भी दीपक भेज सकते हैं। दीपकों में शुद्ध देशी घी का ही उपयोग

करना चाहिए। घी की अनुपलब्धता में शुद्ध तेल का भी उपयोग कर सकते हैं।

पूजनोपरान्त पूजन स्थल से अलग अतिथियों को (दिन में ही) स्वल्पाहार करा सकते हैं।

गृह के मुख्य द्वार पर बन्दनवार बाँधकर द्वार के ऊपर 卐 ॐ 卐 एवं श्री महावीराय नमः तथा द्वार के दोनों ओर शुभ लाभ अंकित करें।

दुकान पर दीपावली एवं बही शुभारम्भ

श्री महावीराय नमः

शुभ 卐 लाभ

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

बही बनाने के मंत्र

श्री ऋषभदेवाय नमः श्री महावीराय नमः

श्री गौतम गणधराय नमः श्री केवलज्ञान-लक्ष्म्यै नमः

श्री शुभ मिति कृष्णा अमावस्या वी नि. संवत् 25..... विक्रम सं. ..... दिनांक ..... मास..... सन्२०..... ई..... वार को श्री (दुकान मालिक का नाम)..... की प्रतिष्ठान का नाम ..... की दुकान की बही का शुभ मुहुर्त किया । यह हो जाने के बाद विधि कराने वाले, दुकान के प्रमुख सज्जन को बही हाथ में देवें और पुष्प क्षेपण करें।

卐 ॐ 卐

अमृत स्नान मन्त्र

मनः प्रसत्यै वचसः पसत्यै कायः प्रसत्यै च कषाय हानिः।
सैवार्थतः स्यात्सकलीक्रियान्या मन्त्रैरुदारैः कृतिकल्पनांगा॥

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणि, अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः स्वाहा।
(इस मन्त्र से जल को मन्त्रित कर शरीर पर छिटककर शुद्धि करें)

मंगल कलश स्थापना मंत्र

(पीले चावल से स्वास्तिक बनाकर मंगल कलश की यह मंत्र पढ़ते हुए स्थापना करें)

ॐह्रीं आद्यानामाद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरत क्षेत्रे, आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रदेश..... जिले..... नगरे..... मासे..... पक्षे.....अमावस्यां, संध्याकाले गौतम गणधर पूजायां भूमि शुर्द्धयर्थं, पात्र शुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं, पुण्य संचायर्थं, केवल ज्ञान प्राप्त्यर्थः, नवरत्न, गंध पुष्पाक्षत श्री फलादि शोभितं शुद्ध प्रासुक जल प्रपूरितं मंगल कलश स्थापनं करोमि।

दीप प्रज्ज्वलन मंत्र

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णं अमावस्यां मोहितिमिर विनाशनाय दीप प्रज्ज्वलन करोमि।

शास्त्र स्थापना मंत्र

ॐह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि।

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम् ॥१॥

श्रीमन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट- प्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजिनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्रयालयम्ः,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥३॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त- वदनाः, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर- प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु- प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्तकुशलाः, चाष्टौ वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥५॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा, वक्षार रुप्याद्रिषु।

इष्वाकार-गिरौ च कुंडल-नगे, द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥६॥
कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलोऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥७॥

सर्पो हारलता- भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत् रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षाति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥८॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्,
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥९॥

इत्थं श्रीजिन- मङ्गलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्करं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस् तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृणवन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता, निर्वाण लक्ष्मीरपि॥१०॥

॥ पुष्पाजंलि क्षिपेत्॥

विद्यासागर-विश्व वन्द्य-श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्॥
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं, सत्यम्- शिवम्-सुन्दरम्॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ।।१।।
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज ।
मुक्ति -वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज ।।२।।
तिहुं जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार ।।३।।
हरता अघ-अंधियार के, करता धर्म प्रकाश ।
थिरतापद दातार हो, धरता निज गुण रास ।।४।।
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान-भानु तुम रूप ।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुं जग भूप ।। ५।।
मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव ।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछू उपाव ।।६।।
भविजन को भवकूपतें, तुमही काढ़नहार ।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार ।।७।।
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल ।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल ।। ८।।
तुम पद-पंकज पूजतें, विघ्न रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता को धरें, विष निरविषता थाय ।।९।।
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिले आपतैं आप ।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।।१०।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ।।११।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।

अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।।१२।।
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जिनदेव ।। १३।।
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ।।१४।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।।१५।।
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति, नरपति देव ।
धन्य भाग मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ।।१६।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेय लगाओ पार ।।१७।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहार के, कीजे आप समान ।।१८।।
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हा हा डूब्यो जात हूँ, नेक निहार निकार ।।१९।।
जो मैं कहहूं और सों, तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसौं बनी, तातै करौं पुकार ।।२०।।
बन्दौं पांचों परम गुरु, सुर गुरु वन्दत जास ।
विघ्न हरण मंगल करन, पूरन परम प्रकाश ।।२१।।
चौबीसों जिनपद नमों, नमो शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ।।२२।।

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान ।
हरो अमंगल विश्व का मंगलमय भगवान ।।१।।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हन्त देव ।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव ।।२।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन वच काय ।।३।।
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म ।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म ।।४।।
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत ।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत ।।५।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

पूजा पीठिका

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः
ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
णमो अरिंहताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

ॐ अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः(पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णतो, धम्मो मंगलं । चतारि-लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमो, सिद्धा लोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थांङ्ग गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानां, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥

अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न- विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥

एसो पंच-णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं होई मंगलं॥४॥

अर्ह-मित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष-लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥६॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशः, चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण-पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशः, चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्टमहं यजे।

ॐ ह्रीं अर्हत्- सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशः, चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।

ॐ ह्रीं भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्त्रानामेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशः, चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र यजे।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र-दशाध्यायेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्घावली

श्री देवशास्त्र गुरु का अर्घ्य

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ,
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जन्म के पातक हरूँ।
इह भाँति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूँ,
अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा : वसुविधि अर्घ संजोयकै अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान् का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसों श्रीजिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्ष-मही ।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तभ्यों -चतुर्विंशति- तीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री महावीर जिन पूजन

श्रीमत् वीर हरैं भव पीर, भरैं सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरिपंकति मौलि सुआई॥
मैं तुमको इत थापतु हों प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणाधन! धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र !अत्र अवतर - अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भव पीर, यातें धार करों॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन सार, केसर संग घसों।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसों॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल सित शशि सम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे ॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।

पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम खण्डित मण्डित नेह, दीपक जोवत हों।

तुम पदतर हे सुख गेह, भ्रमतम खोवत हों॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।

तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु फल कल वर्जित लाय, कंचन थार भरों।

शिवफल हित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरों॥ श्री वीर ... ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।

गुणगाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों॥

श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो।

जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

मोहि राखो हो सरना श्री वर्द्धमान जिनराय जी ॥ मोहि॥
गरभ साढ सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजों भव तरना ॥ मोहि॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायों, मैं पूजों भव हरना ॥ मोहि॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजौं तुम चरना ॥ मोहि॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकलदशैं वैशाख दिवस अरि, घाति चतुक छय करना।
केवल लहि भवि भवसरतारे, जजों चरन सुख भरना ॥ मोहि॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं वरना।
गनफनिवृन्द जजैंतित बहुविधि, मैं पूजों भय हरना ॥ मोहि॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण अमावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(हरिगीतिका)

गणधर, असनिधर, चक्रधर, हलधर, गदाधर, वरवदा।
अरु चापधर विद्या सुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा॥
दुखहरन आनन्द भरन तारन, तरन चरन रसाल है।
सुकुमाल गुनमनि माल उन्नत, भाल की जयमाल है॥

घत्तानंद

जय त्रिशला नंदन हरिकृत वंदन, जगदानंदन चन्दवरं।
भवताप निकंदन तनमन कंदन, रहित सपन्दन नयन धरं।

छंद तोटक

जय केवल भानु कला सदनं, भवि कोक विकासन कंद वनं।
जग जीत महारिपु मोहहरं, रज ज्ञान दृगांवर चूर करं॥
गर्भादिक मंगल मंडित हो, दुख दारिद को नित खंडित हो।
जगमाँहि तुम्ही सत पण्डित हो, तुम ही भव-भाव विहंडित हो।
हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्हीं कवि हो।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलों सोइ मारग राजतियो॥
पुनि आप तनें गुनमाहिं सही, सुर मग्न रहैं जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुण गावत है, लय माननिसों मन भावत हैं॥
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषैं पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहाँ तननं तननं॥
घननं घननं घन घंट बजै, दृमदं दृमदं मिरदंग सजै।
गगनांग गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें॥
कई नारि सुबीन बजावत हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावत हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं॥
'इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।
तुमही जगजीवन के पितु हो, तुम ही बिन कारनतैं हितु हो॥
तुम ही सब विघ्न विनाशन हो, तुम ही निज आनन्द भासन हो।
तुम ही चितचिंतित दायकहो, जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हो।

तुमरे पन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सबही॥
हमको तुमरी शरणागत है, तुमरे गुन में मन पागत हैं।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसु कर्म नहीं नसिये॥
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुतचिन्तन चित्त रतों॥
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों।
तबलों सत् संगति नित्य रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो।
जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिवनारि वरों समता धरिकों।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाँचतु हैं इतनी सुनजी॥

घत्तानंद .....

श्री वीर जिनेशा, नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्दाय अनर्घ्यपदप्राप्ताय महार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- श्री सन्मति के जुगलपद, जो पूजै धर प्रीति।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत॥

॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

श्री गौतमगणधर पूजन (अर्घ्य)

श्री गौतम गणईश, शीष तुम्हैं नमाकर।
आह्वानन अब करूँ, आय तिष्ठो मानस पर॥
पाके केवल ज्योति, ज्ञाननिधि हुए गुणाकर।
निज लक्ष्मी का दान, करो मेरे घट आकर॥

(दोहा)

श्री गौतम गण ईश जी, तिष्ठो मम उर आय।
ज्ञान-लक्ष्मी पति बने, मेरी मानव काय॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधर स्वामिन्!अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधर स्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधर स्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(वसन्ततिलका छन्द)

गांगेय वारि शुचि प्रासुक दिव्य ज्योति।
जन्मादि कष्ट निज वारण को लिया ये।
संसार के अखिल-त्रास निवारने को।
योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज मैं चढाता॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्पूर युक्त मलयागिरि को घिसाया,
संसार ताप शमनार्थ इसे बनाया॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
मुक्ताभ अक्षत सुगन्धि चुना-चुना के
व्याधिघ्न अक्षत-पदार्थ सजा- सजा के॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
कन्दर्प दर्प दलनार्थ नवीन ताजे।
बेला गुलाब मचकुन्द सुपारजाती॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षीरादि मिश्रित अमोघ बल प्रदाता,
पकवान थाल यह भूख निवारने को॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रत्नादि दीप नवज्योति कपूर वर्ती,
उद्दाम मोह तम तोम सभी हटाने॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अज्ञान मोह मद से भव में भ्रमाता,
ये दुष्ट अष्ट कर्म, तिसनाशन को दशांगी॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
केला अनार सहकार सुपक्क जामुन,
ये सिद्धि मिष्ठ फल मोक्षफलादि को मैं॥ संसार के..... ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पानीय आदि वसुद्रव्य सुगन्धयुक्त,
लाया प्रशान्त मन से निज रूप पाने॥
संसार के अखिल त्रास निवारने को।
योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज मैं चढाता॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

वीर जिनेश्वर के प्रथम, गणधर-गौतम-पांय।
नमन करूँ कर जोड़कर, स्वर्ग मोक्ष फल दाय॥

(हरिगीतिका)

जय देव श्री गौतम गणेश्वर, प्रार्थना तुम से करूँ।
सब हटादो कष्ट मेरे, अर्घ्य ले आरती करूँ॥
हे गणेश! कृपा करो, अब आत्म ज्योति पसार दो।
हम हैं तुम्हारे सदय हो, दुर्वासनायें मार दो॥
वीर प्रभु निर्वाण-क्षण में, था सम्हाला आपने।
अब छोड़ तुमको जाऊँ कहाँ, घेरा चहूं दिशि पापने॥
है दिवस वह, ही नाथ स्वामी, वीर के निर्वाण का।
जग के हितैषी विज्ञ गौतम, ईश केवल ज्ञान का॥
नाथ! अब करने कृपा हमको सहारा दीजिये।
दीपमाला, आरती, पूजा ग्रहण मम कीजिये॥

(दोहा)

ज्योति पुंज गणपति प्रभु, दूर करो अज्ञान।
समता रस से सिक्त हो, नया उगे उर भानु॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां कैवल्यलक्ष्मीप्राप्त-श्रीगौतमगणधरस्वामिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री जिनवाणी जी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत फूल चरू , अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै॥
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनी, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत सरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाकविं 108 आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्टद्रव्य ले अरघ बनाय, आत्मशांति हित चरण चढ़ाय,
परम सुख होय, गुरुपद पूजूं परम सुख होय॥
जय जय गुरुवर ज्ञान महान्, ज्ञान रतन का दीजो दान ,
परम सुख होय, गुरुपद पूंजू, परम सुख होय॥

ॐ हूं श्री 108 आचार्य ज्ञानसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विद्यासागर पूजन

आचार्य श्री जी के चरणों में, झुका रहा अपना माथा ।
जिनके जीवन की हर चर्या, बन पड़ी स्वयं ही नवगाथा ॥
जैनागम का वह सुधा कलश, जो बिखराते हैं गली-गली ।
जिनके दर्शन को पाकर के खिलती मुरझाई हृदय कली ॥
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर- मुनीन्द्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

सांसारिक विषयों में पड़कर, मैंने अपने को भरमाया ।
इस रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार नहीं पाया ॥
तब विद्या सिन्धु के जल कण से, भव कालुष धोने आया हूँ ।
आना जाना मिट जाय मेरा, यह बन्ध काटने आया हूँ ॥ १॥
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्दाय जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीतिः स्वाहा ।

क्रोध अनल में जल-जल कर, अपना सर्वस्व लुटाया है ।
निज शान्त स्वरूप न जान सका, जीवन भर इसे भुलाया है ॥
चन्दन सम शीतलता पाने अब, शरण तुम्हारी आया हूं ।
संसार ताप मिट जाय मेरा, चन्दन वन्दन को लाया हूँ॥१॥
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति. स्वाहा ।

जड़ को न मैंने जड़ समझा, नहीं अक्षय निधि को पहचाना ।
अपने तो केवल सपने थे, भ्रम और जगत का भटकाना॥
चरणों में अर्पित अक्षत हैं, अक्षय पद मुझको मिल जावे ।
तव-ज्ञान अरुण की किरणों से, यह हृदय कमल भी खिल जावे॥

ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिः स्वाहा ।

इस विषय भोग की मदिरा पी, मैं बना सदा से मतवाला।
तृष्णा को तृप्त करें जितनी, उतनी बढ़ती इच्छा ज्वाला॥
मैं काम भाव विध्वंस हेतु, मन सुमन चढ़ाने आया हूँ।
यह मदन विजेता बन न सके, यह भाव हृदय में लाया हूँ॥

ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीतिः स्वाहा ।

इस क्षुधा रोग की व्यथा कथा, भव-भव में कहता आया हूँ।
अति भक्ष्य अभक्ष्य भखे फिर भी, मन तृप्त नहीं कर पाया हूँ॥
नैवेद्य समर्पित करके मैं, तृष्णा की भूख मिटाऊँगा।
अब और अधिक न भटक सकूँ, यह अन्तर्बोध जगाऊँगा॥

ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निः स्वाहा ।

मोहान्धकार से व्याकुल हो, निज को नहिं मैंने पहचाना।
मैं रागद्वेष में लिप्त रहा, इस हाथ रहा बस पछताना॥
यह दीप समर्पित है मुनिवर, मेरा तम दूर भगा देना।
तुम ज्ञान दीप की बाती से, मम अन्तर दीप जला देना॥ ५॥

ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिः स्वाहा ।

इस अशुभ कर्म ने घेरा है, मैंने अब तक यह माना था।
बस पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
शुभ-अशुभ कर्म सब रिपुदल हैं, मैं इन्हें जलाने आया हूँ।
इसीलिये तव चरणों में, अब धूप चढाने आया हूँ॥
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिः स्वाहा।

भोगों को इतना भोगा कि, खुद को ही भोग बना डाला।
साध्य और साधन का अन्तर, मैंने आज मिटा डाला॥
मैं चिदानंद में लीन रहूँ, पूजा का यह फल पाना है।
पाना था जिसके द्वारा वह, मिल बैठा मुझे ठिकाना है॥
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीतिः स्वाहा।

जग के वैभव को पाकर मैं, निश दिन कैसा अलमस्त रहा।
चारों गतियों की ठोकर को, खाने में ही अभ्यस्त रहा॥
मैं हूँ स्वतन्त्र ज्ञाता दृष्टा, मेरा पर से क्या नाता है।
कैसे अनर्घ पद पा जाऊँ, यह अरुण भावना भाता है॥
ॐ ह्रूं श्री १०८ आचार्य विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीतिः स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

रत्नत्रय से पावन जिनका, यह औदारिक तन है।
गुप्ति-समिति-अनुप्रेक्षा मे रत, रहता निशदिन मन है॥
सन्मति युग के ऋषि सा जिनका बीत रहा हर क्षण है।
त्याग-तपस्या-लीन यति यह प्रवचन - कला प्रवण है॥
जिसकी हितकर वाणी सुनकर सबका चित्त मगन है।
जिसका पावन दर्शन पाकर शीतल हुई तपन है॥
तत्त्वों का होता नित्त चिंतन, मन्मथ और मनन है।
'विद्या' के उस सागर को मम, शत शत बार नमन है॥

मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प मिला, नैवेद्य दीप ले गुण गाऊं।
कर्मों की धूप बनाकर मैं, उस सिद्ध महाफल को पाऊं॥
यह अर्घ चढ़ाकर हे मुनिवर, मैं अर्घ्य रहित सुख पाऊंगा।
उस मूल्यरहित अक्षत पद को पाकर, निज को ही ध्याऊंगा॥
यह अर्घ मुनिक्षण शील रहा निज गुण का अर्घ बनाऊंगा।
तेरे समान ही बनकर के मैं सुधा सिन्धु बन जाऊंगा॥
ॐ ह्रः श्री सुधासागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों ।।
अर्हंत भाषित बैन पूजूं, द्वादशांग रची गनी ।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरन, शिवहेत सब आशा घनी ।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दया मय पूजूं सदा ।
जजि भावना षोडश रतन त्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूं ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूं ।।
कैलाश श्री सम्मेद गिर, गिरिनार मैं पूजूं सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा ।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं, बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु, जय होय पति शिव गेहके ।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज पद पूजहूं, बहु विधि भक्ति बढ़ाय ।।

शांति पाठ भाषा

(शांति पाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)
शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी ।
लखन एक सौ आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजे ।।१।।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी ।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमों शांतिहित शांतिविधायक ।।२।।
दिव्य विटप पुहुपन की वर्षा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ।।३।।
शांति जिनेश शांति सुखदायी, जगतपूज्य पूजौं शिरनाई ।
परमशांति दीजै हम सबको, पढ़ै तिन्हें पुनि चार संघको ।।४।।

बसन्ततिलका -

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ।।५।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को ।
राजा-प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ।।६।।
स्त्रग्धरा - होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत, हो धर्मधारी नरेशा ।
होवै वर्षा समयपै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अंदेशा ।।
होवै चोरी न जारी सुसमय, वरतैं हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको हो सदा सौख्यकारी ।।७।।

दोहा -

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ।।८।।
(मंदाक्रांता) शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगति का ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूं सभी का ।।
बोलूं प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊं ।।९।।

(आर्या) तब पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।।१०।।
तब लौं लीन रहूं प्रभु जब लौं न पाया मुक्तिपद मैंने
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से ।।११।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी ।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ।।१२।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र पढना चाहिए)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय ।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय ।।१।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूं आह्वान ।
और विसर्जन हूं नहीं, क्षमा करहुँ भगवान ।।२।।
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहुँ मुझे, देहुँ चरणकी सेव ।। ३।।
आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति प्रमाण ।
ते सब जावहुँ कृपाकर , अपने- अपने थान ।। ४।।

-: दोहा :-

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।)

महावीराष्टक स्तोत्र

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावश्चि-दचितः
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनिलसन्तोंऽन्त-रहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग- प्रकटन-परो भानु- रिव यो,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितं,
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमला,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥२॥

नमन्ना केन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥३॥

यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगण-समृद्धःसुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥४॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्मप्येको नृपति-वर सिद्धार्थ तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुतगतिर्,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥५॥

यदीया वाग्गंगा विविधनय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभि र्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥६॥
अनिर्वारौद्रेकस्-त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः
कुमारावस्थाया-मपि निजबलाद्येन विजितः
स्फुरन्नित्यानंद-प्रशमपदराज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥७॥

महा-मोहातंक प्रशमनपराऽऽकस्मिकभिषङ् ,
निरोपेक्षो बन्धु-र्विदित-महिमा मंगलकरः।
शरण्यःसाधूनां भव-भयभृता-मुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥८॥

दोहा-

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या, भागेन्दुना कृतम्।
यः पठेच्छ्रुणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥

॥ इति महावीराष्टकस्तोत्रम्॥

निर्वाण काण्ड भाषा

(मोदक समर्पण करते समय)

(दोहा)

वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥१॥

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चम्पापुर नामी।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दों भाव-भगति उर धार ॥२॥

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखर सम्मेद जिनेश्वर बीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥३॥

वरदत्तराय अरु इन्द्र मुनिन्द्र, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दों भावसहित कर जोड़ि॥४॥

श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्बु प्रद्युम्न कुमार द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय ॥५॥

रामचन्द्र के सुत द्वय वीर, लाड नरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि वन्दौं निरधार॥६॥

पांडव तीन द्रविड-राजान, आठ कोडि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥७॥

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोडि मुनि औरहुँ भये।
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुं काल॥ ८॥

राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान॥९॥

नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दों त्रिभुवन पति ईस ॥१०॥

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दों धरि परम हुलास॥११॥

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वन्दों भव पार॥१२॥

बडवानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दों भव-सागर तर्ण॥१३॥

सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वन्दों नित तास॥१४॥

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगीरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वन्दों नित तहाँ ॥१५॥

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दों नित सुरत सँभार ॥१६॥

अचलापुर की दिश ईशान, तहाँ मेंढ़गिरि नाम प्रधान।
साढे तीन कोड़ि-मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चितलाय॥१७॥

वंसस्थल वन के ढ़िग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥१८॥

जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुगपान॥१९॥

समवशरण श्रीपार्श्व-जिनन्द, रेसन्दीगिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दों नित धरम जिहाज॥२०॥

मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दों नित दीनदयाल॥२१॥

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजे तहाँ।
मन वच काय सहित सिरनाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय॥२२॥

संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
''भैया'' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल॥२३॥

आरती पंच परमेष्ठी

इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।
पहली आरती श्रीजिन राजा, भवदधि पार उतार जिहाजा
॥ इह.... ॥

दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटे भव फेरी
॥ इह.... ॥

तीसरी आरती सूर मुनिन्दा, जन्म मरण दुःख दूर करिन्दा
॥ इह.... ॥

चौथी आरती श्री उवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया
॥ इह.... ॥

पांचवी आरती साधु तुम्हारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी
॥ इह.... ॥

छट्टी ग्यारह प्रतिमा धारी, श्रावक बंदों आनन्दकारी
॥ इह.... ॥

सातवीं आरती श्री जिनवाणी, द्यानत स्वर्ग मुक्ति सुखदानी
॥ इह.... ॥

संध्या करके आरती कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे
॥ इह.... ॥

जो यह आरती पढ़े पढ़ावें, सो नर नार अमर पद पावै
॥ इह.... ॥

चुप-चुप खड़े हो जरूर कोई बात हैं

(१)

धन-धन कार्तिक अमावस प्रभाव है।
चौदस की रात है, ये चौदस की रात है ..... ।।टेक।।
पावापुर वन दिल को लुभा रहा,
आनन्द बादल कैसा ये छा रहा।।
जय- जयकार झड़ी लगी मानो बरसात है ।।चौदस ।।१।।
उषा है फूली सवेरा भी हो गया,
रात्रि भी खो गई अंधेरा भी खो गया,
गगन में बाजे बजे कोई करामात है ।। चौदस।।२।।
गये आज मोक्ष में वीर भगवानजी,
रत्नों की रोशनी देवो ने आन की।।
पर्व यह दिवाली चला देशों में विख्यात है ।।चौदस।।३।।
तभी ज्ञान केवल है, गौतम ने पा लिया,
वही ''शिव'' रास्ता हमको दिखा दिया।।
खुशियाँ मनाये, क्यो न, खुशी की ये बात है ।।चौद^{स}।।४।।

❀❀❀

(२)

(तर्ज- जय जय गुरुवर भक्त पुकारे)

जय जय महावीर, भक्त पुकारे, आरती मंगल गाये।
आरती कर श्री वीर प्रभु की, रोग दुखः मिट जाये।।
वीर प्रभु के चरणों में नमन्...

कुण्डलपुर नगर में जन्मलिया, धन्य है त्रिशला माता।
पिता तुम्हारे सिद्धार्थ राजा, शिव मारग है भाता॥
भक्तजन सब मंगल गाये, फूले नहीं समावें।
जय जय महावीर स्वामी॥१॥
निर्वाण भुमि पावापुर आपका, पंचनाम महावीर धराये।
वीरप्रभु में अतिशय दिखाया, पाप कर्म क्षय हो जाये॥
भक्त जन सब मंगल गाये, २ फूले नहीं समायें॥
जय जय महावीर स्वामी॥२॥
बेड़िया तोड़ी चंदना की, दर्शन भक्ति भाया।
म्हें थारे गुण गाया जी, मनवांछित फल पाया।
भक्त जन सब मंगल गाये ..... फूले नहीं समाये॥
जय जय महावीर स्वामी ॥३॥
शिखर हटाया मन्दिर का, अतिशय तुम ने दिखाया।
पत्थर पाया बिन खान का, सवाँरे सारे कारज देवा।
भक्त जन सब मंगल गाये, फूले नहीं समाये॥
जय जय महावीर स्वामी ॥४॥

आरती महावीर स्वामी की

ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो ।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ॥
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी ।
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यो तपधारी
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
जग में पाठ अहिंसा, आप ही विस्तार्यो ।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
इह विधि चांदनपुर में अतिशय दरशायो ।
ग्वाल मनोरथ पूर्यो, दूध गाय पायो
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
अमरचंद को सपना, तुमने प्रभु दीना ।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना ॥
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी ।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी ॥
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
जो कोई तेरे दर पर इच्छा कर आवे ।
धन सुख सब कुछ पावे, संकट मिट जावे ॥
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
निशि दिन प्रभु मन्दिर में, जगमग ज्योति जरै ।
''हम सेवक'' चरणों में, आनन्द मोद भरे
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज की आरती

विद्यासागर की, गुण आगर की, शुभ मंगल दीप सजायके।
आज उतारूँ आरतिया ..... ॥ टेक॥
मल्लप्पा श्री, श्रीमती के गर्भ विषें गुरु आये।
ग्राम सदलगा जन्म लिया है, सब जन मंगल गाये॥
गुरू जी सब जन मंगल गाये,
न रागी की, न द्वेषी की, शुभ मंगल दीप सजायके।
आज उतारूँ आरतिया ..... ॥१॥ विद्या ॥
गुरूवर पाँच महाव्रत धारी, आतम ब्रह्म विहारी।
खड्गधार शिवपथ पर चलकर, शिथिलाचार निवारी ॥
गुरू जी शिथिलाचार निवारी,
गृह त्यागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे।
आज उतारूँ आरतिया ..... ॥ २॥ विद्या ॥
गुरूवर आज नयनसे लखकर, आलौकिक सुख पाया।
भक्ति भाव से आरति करके, फूला नहीं समाया॥
गुरूजी फूला नहीं समाया,
ऐसे मुनिवर को, ऐसे ऋषिवर को, हो वन्दन बारम्बार हो।
आज उतारूँ आरतिया ..... ॥३॥ विद्या ॥

मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज की आरती

सुधासागर की, गुण आगर की शुभ मङ्गल दीप सजाय के।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।
रूपचन्द्र पितु शान्ति मात के, गर्भ विषैं मुनि आये।
ईसुरवारा जन्म लिया है, सब जन मङ्गल गाये।।
मुनीश्वर सब जन मङ्गल गाये।
ना रागी की, ना द्वेषी की, ले आतम ज्योति जगाय हो।
मैं आज उतारूँ आरतिया।। 1।।
गुरु उपवास व्रतों के धारी, आतम ब्रह्म बिहारी।
खड्गधार शिव पथ पर, चलकर शिथिलाचारी निवारी।।
मुनीश्वर शिथिलाचारी निवारी।।
गृह त्यागी की वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल हो।
मैं आज उतारूँ आरतिया।। 2।।
गुरुवर आज नयन से लखकर, अनुपम निज सुख पाया।
भक्तिभाव से आरति करके, फूला नहीं समाया।।
मुनीश्वर फूला नहीं समाया।।
ऐसे ऋषिवर को, ऐसे मुनिवर को, कर वंदन बारम्बार हो।
मैं आज उतारूँ आरतिया।। 3।।
सुधासागर की, गुण आगार की, शुभमङ्गल दीप सजाय के।
मैं आज उतारूँ आरतिया।। 4।।

चौंसठ ऋद्धि अर्घ

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं मनः पर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं पदानुसारिणीबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं संभिन्नसंश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं दूर श्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं दूर दर्शित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तिबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

23. ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

24. ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

25. ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

26. ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

27. ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

28. ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

29. ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

30. ॐ ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

31. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

32. ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

33. ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

34. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

35. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

36. ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

37. ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

38. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

39. ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नम अर्घ्यं नि. स्वाहा।

40. ॐ ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

41. ॐ ह्रीं दीप्ततपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

42. ॐ ह्रीं तप्त तपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

43. ॐ ह्रीं घोरतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

44. ॐ ह्रीं महातपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

45. ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

46. ॐ ह्रीं अघोरब्रम्हचारित्वतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

47. ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

48. ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

49. ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

50. ॐ ह्रीं आमशौंषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

51. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

52. ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

53. ॐ ह्रीं मलौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

54. ॐ ह्रीं विप्रौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

55. ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

56. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

57. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषोषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

58. ॐ ह्रीं आशीर्विष रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

59. ॐ ह्रीं दृष्टिविषरस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

60. ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

61. ॐ ह्रीं मधुस्त्रविरस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

62. ॐ ह्रीं अमृतस्रविरस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

63. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

64. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

65. ॐ ह्रीं अक्षीणमहालय ऋद्धये नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(इति शुभम्)

Printed at :-

Ajmer

Ph. : 0145 - 2422291-96-61